रामजन्म भूमि बाबरी मस्जिद और न्यायालय का निर्णय

संगठन हमेशा ही विचारों की कब्र होता हैं। संगठन न्याय भावना को कमजोर करके अपनत्व को अधिक महत्वपूर्ण बनाता है। संगठन तर्क में बाधक और शक्ति का श्रोत होता हैं।संगठन व्यक्ति को सब प्रकार से सशक्त और लाभ पहुंचाता है किन्तु समाज को कमजोर करता है। संगठन तात्कालिक विस्तार में लाभदायक किन्तु अंतिम परिणाम हानिकर होता है।

इस्लाम किसी भी आधार पर न धर्म है न समाज व्यवस्था। इस्लाम अपने प्रारंभ से ही संगठन रहा। यही कारण है कि उसमें संगठन के गुण अवगुण विद्यमान रहे और हैं। सूफी सन्तों ने इस्लाम को धर्म की दिशा में प्रेरित किया किन्तु कालान्तर में वह दिशा इस्लाम के इतिहास में दफन हो गईं। अब उसके अवशेष ही बचे हैं अन्यथा इस्लाम एक संगठन के रूप में विस्तार पा रहा हैं।

हिन्दुत्व कभी न धर्म रहा न संगठन। हिन्दुत्व या तो व्यक्ति के व्यक्तिगत आचरण से जुड़ा रहा या समाज व्यवस्था सें। हिन्दुत्व में न्याय और तर्क महत्वपूर्ण होता है जो समाज का गुण है किन्तु विस्तार और शक्ति में कमजोर होता है जिसने उसे कई सौ वर्षो तक गुलाम बनाकर रखा। हिन्दुत्व को कई सौ वर्षो तक तो इस्लाम ने ही गुलाम बनाकर रखा। इस्लाम और हिन्दुत्व में यह स्पष्ट अन्तर है कि इस्लाम ने अपने संगठन को धर्म घोषित कर दिया तथा अपने (अ) धर्म के ही नियंत्रण में राज्य को भी शामिल कर लिया जबकि हिन्दुत्व समाज व्यवस्था ने धर्म को समाज से अलग रखा। राज्य तो उसका था ही नहीं।

इस्लाम ने भारत में हिन्दुत्व को धर्म प्रचारित करके उस पर दबाव बनाना शुरू किया। जिन मुस्लिम राजाओं ने जरा भी न्याय का पक्ष लिया उन्हें उनके संगठन ने कमजोर किया और अत्याचार करने वालों को प्रोत्साहित। हिन्दुओं पर कई तरह के अत्याचार हुए। उनके पूजा स्थलों को तोड़ा गया। वाराणसी का मंदिर तो स्पष्ट ऐतिहासिक प्रमाण है कि मुस्लिम शासन काल में दूसरे धर्म स्थानों को तोड़कर मस्जिद बनाने में कोई राजकीय बाधा नहीं थी। इस्लाम आम तौर पर ऐसे अत्याचार करता रहा होगा इसका आभास मैंने स्वयं किया जब मेरे देखते देखते ही अफगानिस्तान में बुद्ध की मूर्तियों को तोड़ दिया गया। मैंने इस्लामिक शासन काल की ऐतिहासिक कहानियॉ सुन रखी हैं कि सिख धर्म गुरू के बेटों को इस्लाम कबूल न करने के कारण जिन्दा दीवारों में चुनवा दिया गया था। रोंगटे खड़े हो जाते हैं ऐसे अत्याचारों की बातें सुन सुन कर। शरीर में सिहरन पैदा होती है। यही कारण है कि मैं ऐसी घटनाऍं न पढ़ना चाहता हूॅ न सुनना। किन्तु जब मैं सुनता हूॅ कि आज भी अफगानिस्तान या पाकिस्तान में इश निन्दा कानून के नाम से वैसे ही जालिम कानून मौजूद हैं तो इतिहास की घटनाओं पर स्वयं न देखने के बाद भी विश्वास करना पड़ता हैं। मुझे विश्वास है कि अयोध्या में मन्दिर को तोड़कर मस्जिद बनी होगी।

इस्लाम के बाद अंग्रेज आये जिनके कार्य काल में इस्लाम कोई उल्लेखनीय अत्याचार नहीं कर सका। इसाइयत भी संगठन ही माना जाता है। उसने इस्लाम के साथ अनेक युद्ध लड़े जिन्हें क्रुसेड कहा जाता है किन्तु उन्होंने भारत में स्वयं को राजनैतिक गुलामी तक ही सीमित किया, धार्मिक या सामाजिक गुलामी तक नहीं। इसाइयत ने स्वयं को राज्य से भी दूर रखा। भले ही वह दूरी हिन्दुत्व की तरह पाक साफ न हो किन्तु वह दूरी इस्लाम की तरह एकाकार भी नहीं थी। ऐसे ही गुलामी काल में कुछ निराश हिन्दुओं ने इस्लाम को जैसे का तैसा के रूप में उत्तर देने की योजन बनाई। उन्होंने हिन्दू समाज व्यवस्था को हिन्दू धर्म कहना शुरू कर दिया। उन्होंने इस्लाम की ही नकल करके हिन्दू धर्म को संगठन का रूप दिया। स्वाभाविक ही था कि उसमें शक्ति आई। संघ नामधारी यह संगठन दिन दूनी राम चौगुनी गति से बढ़ने लगा। इसने स्वतंत्रता संघर्ष में कोई खास भूमिका अदा नहीं की क्योंकि स्वतंत्रता संघर्ष में इस्लाम कोई पक्षकार नहीं था और यह संगठन इस्लामिक अत्याचारों के विरूद्ध बना था। इस्लामिक अत्याचारों की कुछ सच्ची और कुछ काल्पनिक कहानियॉ सुनाकर यह संगठन बढ़ रहा था।

इस्लाम और संघ दोनों ही पूर्ण रूपेण संगठन थे। इस्लाम में तो कुछ लोग उदारवारी भी थे किन्तु संघ में कोई नहीं था। इस्लाम ने भारत विभाजन की पहल करके संघ को एक अवसर दे दिया और संघ ने गांधी हत्या की मौन सहमति से उस अवसर को गंवा दिया। संघ पर प्रतिबंध लगा और संघ की सम्पूर्ण विश्व और भारत में तो विशेष प्रतिक्रिया हुई ही किन्तु आम हिन्दुओं में भी उसकी इतनी गहरी छाप पड़ी कि संघ पर आज तक उसकी काली छाया प्रेत की तरह लगी हुई है। मुझे याद है कि मैं अपने उस

बाल्य काल में भी उस घटना से प्रभावित हुआ था। संघ ने पैतरा बदला और उसने राजनीति में जाना तय किया। समान नागरिक संहिता, गोहत्या बन्दी, धर्म परिवर्तन पर रोक, कश्मीर की धारा तीन सौ सत्तर की समाप्ति आदि को उसने आधार बनाया। समान नागरिक संहिता उसका मुख्य मुद्दा था।

कालान्तर में संघ को दिखा कि समान नागरिक संहिता का मुद्दा भावनात्मक न होने से उबाल पैदा नहीं कर पा रहा तो संघ ने रामजन्म भूमि के मुद्दे को आगे कर दिया और तब से आज तक यह रामजन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवाद ही संघ का राजनैतिक एजेन्डा रहा है। यदि मुसलमान इस मुद्दे पर कभी कुछ पीछे भी हटना चाहे तो संघ परिवार ने काशी और मथुरा भी जोड़ दिया। नरसिंह राव जी ने इस संबंध में कुछ निर्णायक पहल की तो संघ परिवार ने बाबरी ध्वंस करके उस पहल को ही ध्वस्त कर दिया। संघ ने पूरा प्रयास किया कि रामजन्म भूमि का मुद्दा किसी भी रूप में उसके हाथ से न निकले।

मैं आपको स्पष्ट कर दूँ कि रामजन्म भूमि बाबरी मस्जिद मुद्दा मन्दिर मस्जिद का प्रश्न भी नहीं है और रामजन्मभूमि का भी नहीं है। यह मुद्दा सीधे सीधे उस ऐतिहासिक भावना से जुड़ा है जिसके अनुसार इस्लाम मानता है कि वह जहॉ कब्जा कर ले वह उसका हैं। यदि कोई हिन्दू या इसाई मुसलमान बन जाय तो वह पूरी तरह उसकी सम्पत्ति है। वह फिर धर्म नहीं बदल सकता। यदि किसी भी भूमि पर उसने एक बार मस्जिद या इदगाह की नींव रख दी तो वह अब नहीं हट सकती क्योंकि यह तो उसकी धार्मिक जगह हैं। इस्लाम की यह धारणा तब तक तो चली जब तक विश्व दो ध्रुवों (पूंजीवादी लोकतंत्र और साम्यवादी तानाशाही) के बीच शीतयुद्धरत था। दोनों गुट इस्लाम की खुशामद करते थे। किन्तु अब साम्यवाद का पतन हो गया। समाजवाद भी दम तोड़ रहा है। अब इस्लाम को या तो अपनी ताकत पर लड़ना होगा या अपनी विश्व इस्लामीकरण की धारणा से पीछे हटना होगा। इस्लाम ने पराजित साम्यवाद को भी अपने साथ मिला लिया किन्तु फिर भी न विश्व में उसे सफलता मिल रही है न भारत में। जिस इस्लाम को भारत में छेड़ने से बड़े बड़े लोग भय खाते थे उस इस्लाम को गुजरात में मोदी ने सभी कानून न्याय मानवता हिन्दुत्व आदि को किनारे रखते हुए सबक सिखा दिया और गुजरात का मुसलमान भी मोदी को वोट देने लगा है। राममंदिर बाबरी मस्जिद मुद्दा भारत के मुसलमान और हिन्दू के लिये शक्ति परीक्षण का प्रतीक बन गया हैं। या तो भारत का मुसलमान विश्व इस्लामीकरण की अवधारणा से पीछे हटे तो ठीक है अन्यथा उसका मनोबल उस सीमा तक तोड़ दिया जाय कि वह गुजरात सरीखा सीधी राह चलने लगे। मन्दिर कोई मुद्दा नहीं है। यदि मुसलमान मन्दिर छोड़ भी दे तो टकराव खतम नहीं होने वाला जब तक मुसलमान संगठन शक्ति के बल पर ज्यादा लाभ उठाने की अपनी आदत नहीं छोड़ता। बात बात में इनका पर्सनल ला आकर खड़ा हो जाता है चाहे औचित्य हो या न हो। यदि आप किसी भी हालत में अपने पर्सनल ला से एक इंच भी समझौता नहीं कर सकते तो हिन्दू तो बेचारा बरदाश्त कर लेगा किन्तु यदि अमेरिका या मोदी या संघ आपकी पिटाई कर दे तो हिन्दू प्रसन्न क्यों न हो? क्या ऐसी स्थिति में हिन्दू न्याय अन्याय की बात करे? पोप भारत आते हैं तब आपका प्रदर्शन होता है, न्यूयार्क में कुरान की प्रति जली तो हिंसक प्रदर्शन करके अठारह मुसलमान भारत में मर गये, बाटला हाउस में दो आतंकवादी मुसलमान युवक मारे गये तो अब तक आप उसे जिन्दा रखना चाहते हो। हिन्दुओं ने तो अपने ब्रम्हण राजा रावण की हत्या की प्रशंसा की लेकिन आप है कि दो आतंकवादियों के मारे जाने पर भी असली और नकली का मुद्दा उठाये हुए हैं। मुठभेड़ असली या नकली इसके लिये साम्यवादी, मुलायम सिंह, दिग्विजय सिंह, अमर सिंह, अग्निवेष, अरून्धती राय आदि को लड़ने दीजिये। यदि आप एक धार्मिक संगठन के रूप में जन्तर मन्तर पर जाकर आतंकवाद का समर्थन करेंगे तो आम हिन्दू न्याय अन्याय छोड़कर तब तक राममन्दिर या ऐसे अन्य मामलों में आपका विरोध करेगा जब तक आपका मनोबल न टूट जाय। मन्दिर का मुद्दा कोई संघ का नहीं हैं। संघ ने तो इस्लाम की बदनाम छवि से राजनैतिक लाभ उठाने के लिये इसे मुद्दा बना लिया है।

पहली बार भारत के इतिहास में भारतीय मुसलमानों ने सूझ बूझ से काम लिया है। मुलायम और लालू ने बहुत उकसाया, और पाकिस्तान में तो प्रदर्शन तक हुए किन्तु भारत का मुसलमान गंभीर हैं। न्यायालय के न्यायाधीशों में शर्मा जी की टिप्पणियॉ तो एकपक्षीय थीं किन्तु न्यायमूर्ति खान ने बहुत गंभीर टिप्पणी लिखी। चिदम्बरम् जी ने सरदार पटेल की भूमिका निभाई। ऐसी हवा बनाई की छिटपुट हल्ला भी नहीं हुआ। एक लेखक ने लिखा कि चूहे को मारना तो डंडे से ही पर्याप्त था किन्तु बन्दूक और बम की अनावश्यक तैयारी हुई। मैं इस तैयारी को भी प्रभावात्मक मानता हूँ। एक संदेश जाना ही चाहिये कि अब

घींगा मुश्ती नहीं चलेगी। या तो चूहा चुपचाप पिंजड़े में घुस जाय अन्यथा जान भी जा सकती है। तैयारियों को देखकर ही संघ परिवार ने भी फैसले के पूर्व ही समर्पण कर दिया था। यदि फैसला मुसलमानों के भी पक्ष में होता तो शान्ति भंग के लक्षण नहीं थे। न्यायालय में अपील न मुसलमान करेंगे न हिन्दू। यह अपील तो लड़ाकू लोग ही करेंगे जिनका यही पेशा है। प्रसिद्ध वकील प्रशान्त भूषण जी ने टीवी पर कहा कि मुसलमानों के साथ न्याय नहीं हुआ है। यह उनका व्यवसाय है। दैनिक भाष्कर अखबार में छपीं एक खबर के अन्त में लिखा एक वाक्य मुझे बहुत पसंद आया कि यदि आप किसी पक्षकार के हिमायती न होकर न्याय की कुर्सी पर होते तो आप रामजन्मभूमि बाबरी मस्जिद के साठ वर्षो से चल रहे विवाद में क्या निर्णय देते? मैंने खूब पक्षपात से दोनों पक्षों पर विचार किया और मेरा भी निर्णय यही हुआ तो न्यायाधीश भी तो बेचारे इसी तरह तराजू पर तौलते हैं।

मैं अपने मुसलमान भाइयों को सलाह देता हूँ कि वे देश काल परिस्थिति के अनुसार अपनी धारणाएँ बदलें। वे धर्म को धर्म तक ही सीमित करें। राष्ट्र, धर्म और समाज को एक साथ न जोड़े। वे चाहे मजबूत हों या कमजोर न्याय की ओर झुके ओर संगठन की ओर से हटें। पाकिस्तान के मुसलमान चोरी छिपे भाग भाग कर भारत आवें और कश्मीर के मुसलमान पाकिस्तान से जुड़ने की जिद करें ऐसे नाटकों की अब पोल खुल चुकी है। भारत का आम हिन्दू संघ से नफरत करता है किन्तु जब उसे आतंकवादी इस्लाम का भय दिखता है तब वह मजबूर हो जाता हैं। आपने संगठित वोटों के नाम पर राजनैतिक दलों को अब तक ब्लेकमेल किया है किंतु अब कांग्रेस और भाजपा में कुछ समझदारी आ रही है। यदि भारत का पूरा धर्मनिरपेक्ष तबका आप दोनों के खिलाफ एक जुट हो जाये जैसा कि अभी हो रहा है तो आपका क्या हाल होगा यह आपको सोचना चाहिए। जैसी सूझबूझ आपने अभी बाबरी मस्जिद राम जन्म भूमि प्रकरण के परिणाम के समय दिखाई है वैसी यदि एक वर्ष भी कायम रख लें तो मुझे पूरा विश्वास है कि हिन्दुओं के मन में जमी अविश्वास की काई धुलनी शुरू हो जायेगी।

राम मंदिर , बाबरी मस्जिद के न्यायालय का फैसला हमें अवसर देता है कि हम धर्म के नाम पर बने संगठनों को कमजोर कर दे। सीधा सा हल है कि भारत में मुसलमान अपने धर्म का पालन तो स्वतंत्रता से करे किन्तु नागरिकता के आधार पर समान नागरिक संहिता को स्वीकार कर लें। मैं समान नागरिक संहिता कह रहा हूँ , समान आचार संहिता नहीं जैसा कि संघ प्रचारित करता है। साथ ही ईस्लाम और संघ धर्म परिवर्तन के प्रयासों के विरूद्ध भी सहमत हो जाये। मान लिया जाय कि भारत सवा सौ करोड़ व्यक्तियों का देश है, धर्मो और जातियों का संघ नहीं। अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक जैसे शब्दों को कब्र में दफन कर दिया जाय। भारत को दारूल इस्लाम या हिन्दू राष्ट्र का नारा लगाने वालों को राष्ट्रद्रोही मानना शुरू कर दिया जाय। हिन्दुओं के राम और इस्लाम के खुदा भी हमारे इस कार्य में सहायता करेंगे। मेरे विचार में राम मंदिर, बाबरी मस्जिद समस्या का यही समाधान है।

कार्यालयीन प्रश्नों के उत्तर

1.प्रश्न– आपने मेरे निवास पर लोक स्वराज्य की घोषणा की थी। यह आपका दृढ़ संकल्प था। राष्ट्रपति की वेतन वृद्धि के विरूद्ध छोटा सा कदम भी उठाया गया था। इस प्रयास को क्यों छोड़ दिया गया? आपके जिले में नक्सलवाद बढ़ रहा है। इस संबंध में क्या हो रहा है। पंकज जी और दुबे जी क्यों खिलाफ हो गये।

उत्तर– मैंने लोक स्वराज्य के प्रति संकल्प किया था। दो हजार नौ पचीस दिसम्बर तक की अवधि थी। पूरा प्रयत्न करने के बाद भी काम पूरा नहीं हुआ। मैंने दो हजार आठ से ही अपनी असफलता घोषित कर दी। मैं दिल्ली से अम्बिकापुर लौट गया। किन्तु अब भी मेरा दृढ़ विश्वास है कि लोक स्वराज्य ही सभी समस्याओं का एकमात्र समाधान है। मैं निरंतर प्रयत्नशील हूँ कि लोक स्वराज्य के लिये सक्रिय संगठनों को सब प्रकार का शारीरिक मानसिक समर्थन दूँ। धन और पद मैं पहले ही छोड़कर वानप्रस्थ लिया हूँ। अतः आर्थिक सहयोग अब कर नहीं सकता।

भले ही मैं लोक स्वराज्य की दिशा में सफल नहीं हो पाया किन्तु स्वराज्य की भूख पूरे भारत में पैदा अवश्य हुई है। विचार मंथन की प्रवृत्ति बढ़ी है। सर्वोदय और संघ के लोग एक दूसरे के बिल्कुल विरोधी थें किन्तु अब उनकी कटुता घटी है। बड़ी संख्या में संघ और सर्वोदय के लोग एक साथ बैठने लगे

हैं। हिन्दुओं और मुसलमानों में भी आपसी अविश्वास घटा है। इस कटुता कमी के प्रयास में मुझे दोनों पक्षों की कई बार कटु नाराजगी झेलनी पड़ी किन्तु मैंने सब बरदास्त किया जिसके अच्छे परिणाम आज स्पष्ट दिख रहे हैं। बहुत प्रसन्नता है कि हमारा क्षेत्र भारत का एकमात्र ऐसा क्षेत्र है जहॉ नक्सलवाद कम हो रहा है। अन्यथा पूरे भारत में तो बढ़ ही रहा है। यदि भारत के अन्य क्षेत्र भी ऐसा प्रयोग करें तो परिणाम अवश्य ही अच्छे होंगे।

पंकज जी ने दो वर्ष पूर्व ही व्यवस्था परिर्वतन मंच नाम से अलग संगठन बनाया है। उसमें भी मेरी सलाह और समर्थन है। मुझे ऐसी जानकारी नहीं कि वे नाराज हैं। वैचारिक मतभिन्नता तो अच्छी बात है, बुरी नहीं।

मैं जब दिल्ली में था तब मुझे धर से आर्थिक सहायता थी जो मैंने दो हजार नौ से लेनी बंद कर दी। वानप्रस्थ के बाद किसी से मांगना अच्छी बात नहीं। दिल्ली का पूरा कार्य संचालन ओम प्रकाश जी दुबे करते थे। अब धनाभाव में वहॉ का कार्यालय बन्द हो गया। दिल्ली में एक छोटा सा कार्यालय कुछ दिन से रहा। कार्यालय का संचालन भी सुरेश जी करने लगें। सुरेश जी ज्ञान यज्ञ परिवार से जुड़े हैं जबकि दुबे जी नहीं थे। दुबे जी पिछले दो तीन वर्षो से मेरे प्रति कई प्रकार की चर्चाऍ करते रहते थे। किन्तु वे चर्चाऍ व्यक्तिगत होने से मैं नहीं चाहता था कि उसका योजना पर कोई प्रभाव पड़े। उनकी आर्थिक इमानदारी भी मुझे उनके प्रति आकर्षित किये रहती थी। एकाएक पांच मित्रों ने बैठकर मई दस में एक नई संस्था लोक समिति के नाम से घोषित कर दी जिसका प्रकाशन ज्ञान तत्व अंक दो सौ एक में हुआ। वे पांच साथी थे ओमप्रकाश जी दुबे, भाई महावीर सिंह जी, केशव चौबे जी, ईश्वरदयाल जी और अमर सिंह जी आर्य। साथ ही दुबे जी कई प्रकार की बातें भी करने लगे। मैं मजबूर था क्योंकि मेरी आर्थिक स्थिति तो ऐसी थी नहीं जो मैं किसी भी प्रकार का कोई खर्च कर पाता और बिना खर्च के संस्था चल नहीं पाती। अतः मेरे पास सुनने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था। मैं यह भी सोचता था कि अवश्य ही पिछले छ आठ माह में मेरे व्यवहार या नीयत में कोई कभी दिखी होगी तभी तो इस प्रकार की चर्चाऍ उठ रही हैं। किन्तु जब रामानुजगंज की बैठक में उन्होंने आरोप लगा दिया कि मुनि जी के कारण उनकी बदनामी हो रही है तब मैंने उचित समझा कि अपने मित्र को बदनामी की मजबूरी से बचाना चाहिये।

अब मुझे लगता है कि बदनामी मुक्ति के बाद वे नाराज नहीं होंगे। यदि होंगे तो मैं उन्हें मना लूंगा। संभव है कि या तो मेरे में कोई कमी हो या कहीं साथियों को भ्रम हो। इन पांच साथियों में से सिर्फ महावीर सिंह जी ही दोनों जगह थे अन्यथा अन्य सब लोग तो ज्ञान यज्ञ परिवार से संबद्ध नहीं हैं। महावीर सिंह जी ने भी अभी ज्ञान यज्ञ परिवार छोड़ दिया है। ज्ञान यज्ञ परिवार में कोई मतभेद नहीं है। लोक समिति नाम से जो अलग संगठन बना था वह दुबे जी ने भंग कर दिया हैं। अब एक नया नामकरण लोक स्वराज्य संघ नाम से हुआ है। नाम चाहे कोई भी हो किन्तु यदि उसकी दिशा लोकस्वराज्य है तो मेरा सब प्रकार से सहयोग समर्थन रहेगा। यदि उनका कोई एकाध साथी आलोचना भी करेगा तो मुझ पर कोई प्रभाव नहीं होगा क्योंकि आलोचना व्यक्तिगत होगी और प्रयास लोक स्वराज्य के रहेंगे। मैं आपको आश्वस्त करता हूॅ कि मेरी अर्थ शून्यता के अतिरिक्त कोई व्यावहारिक कमी होगी तो मैं पूरी तरह तैयार हूॅ और यदि मेरे विचार स्वातंत्रय पर बंधन लगाने की कोई शर्त होगी तो ट्रस्ट के अतिरिक्त कोई बंधन मुझे स्वीकार नहीं। अब सोचना मुझे नहीं हैं। मैंने पूरी तरह सोच लिया है।

राष्ट्रपति की वेतन वृद्धि के विरोध का प्रस्ताव सर्वसेवा संघ का था। उस प्रस्ताव को हम बढ़ा रहे थे। मेरे दिल्ली छोड़ने के बाद उस प्रस्ताव पर काम नहीं हुआ जिसकी चर्चा पिछले अंक दो सौ सात में हुई हैं। दुबारा उचित नहीं।

(2) प्रश्न–यू0आई0डी0 विशिष्ट पहचान पत्र शुरू किया गया है। कुछ विद्वानों ने इसका विरोध भी किया है। आपकी राय क्या है?

उत्तर– भारत सरकार ने पिछले तीन चार वर्षो में जो भी उल्लेखनीय कार्य किये हैं उनमें पहचान पत्र भी विशेष महत्व रखता है। जिस तरह सरकार ने ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना तथा सूचना का अधिकार कानून बनाया उतना ही महत्वपूर्ण यह कार्य भी है। भारत के प्रत्येक नागरिक को एक बारह अंको के कोड

नंबर से प्रमाणित करना बहुत महत्व का कार्य है। इससे समाज के सामान्य नागरिकों को बहुत सुविधा होगी तथा अपराधियों की कठिनाइयां बढ़ जायेगी। यह कार्य तो बहुत पहले ही होना चाहिये था किन्तु कुछ पाकिस्तान समर्थक लोगों के व्यवधान के भय से यह पहचान पत्र रूका रहा। मनमोहन सिंह जी सरकार ने हिम्मत करके एक अक्टूबर को महाराष्ट्र से योजना शुरू कर दी और समारोह में प्रतीक स्वरूप दस परिचय पत्र दिये।

आम भारतीय ने इस योजना की प्रशंसा की किन्तु कुछ रजिस्टर्ड विरोधियों ने अपनी पहचान बतानी जरूरी समझी। इस योजना का विरोध करने वाले कागज पर सत्रह लोगों ने हस्ताक्षर किये जिनमें न्यायमूर्ति ए0पी0शाह, न्यायमूर्ति कृष्णा अय्यर ,इतिहासकार रोमिला थापर, अरूणा राय, नौकरशाह ए0पी0 शंकरन, उपेन्द्र बख्शी, उमा चक्रवर्ती, शबनम हासमी,शाहनी घोष आदि शामिल हैं। इनमें एक भी ऐसा नाम नहीं जिनके हस्ताक्षर से किसी को आश्चर्य हुआ हों क्यों की ये लोग तो कम्पेन बहादुर माने ही जाते हैं। यदि ये प्रतिष्ठित लोग विरोध नहीं करते तब आश्चर्य होता क्योंकि सुर्खियों में बने रहने के लिये कभी कभी अपनी पहचान प्रचारित करनी पड़ती हैं।

मैं पूरी तरह इस मत का हूॅ कि सरकार को ऐसे रजिस्टर्ड विरोधियों के विरोध की अनदेखी करते हुए यह पहचान पत्र और तेज गति से जारी करने चाहियें।क्योंकि ये पहचान पत्र शरीफ लोगों के लिए जहॉ सुविधा का आधार बनेंगे वहीं अपराधियों तथा विदेशी घुसपैठियों के लिए परेशानी का आधार भी बनेंगे। यही कारण है कि कम्पेन करने वालों को चिंता हो रही है। समाज को चाहिए कि वह ऐसे जनहित के सरकारी प्रयासों की सराहना करें ।

प्रश्नोत्तर

(1) श्री क्रान्ति भट्ट संवाददाता दैनिक हिन्दुस्तान चमौली

विचार– ज्ञान तत्व मेरे लिए सिर्फ एक जानकारी की पत्रिका नहीं बल्कि जीवन की समग्रता की संहिता है। विवेकपूर्ण,तथ्यपूर्ण और विचारोत्तेजक ज्ञान तत्व मुझे आपके द्वारा प्रेषित ऐसा उपहार है जिसके लिए शब्दों से अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती हैं। ज्ञान तत्व उपयोगी ही नहीं बल्कि ज्ञान का ऐसा भंडार है जो जीवन में सारतत्व बना देता है। इसकी निरंतरता मेरे लिए स्वाद की निरंतरता की तरह है।

सदैव आपका

(2) श्री अलादीन शाह पूर्व दीवान, ढोढर, श्योपुर, मध्यप्रदेश

विचार– मुनि जी को आदाब। ज्ञान तत्व बराबर मिल रहा है और उसका अध्ययन भी करता हूॅ पढ़ने के बाद और भी लोगों को पढ़ाता हूॅ। ज्ञात तत्व की प्रतीक्षा बनी रहती हैं नई नई गंभीर बातें पढ़ने को मिल जाती हैं।

(3) श्री होतीलाल शर्मा, मंत्री, उ0प्र0 आचार्य कुल, 188 दक्षिण कृष्णापुरी, मुजफ्फरनगर, यू0पी0

विचार– मैं ज्ञान तत्व बराबर पढ़ रहा हूॅ। मुझे इस बात का बहुत दुख है कि इसकी प्रतियों को मैं क्रमबद्धता से सुरक्षित नहीं रख सका हूॅ। मैं यह नहीं सोच पा रहा न ही निर्णय ले पा रहा हूॅ कि इस सुंदरकार्य, तथा साहस के लिये मैं आपको किन शब्दों में साधुवाद दूॅ। मैं सत्य हृदय से लिख रहा हूॅ कि आप बहुत श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं। मैंने तमाम लेखकों के विचारों को रेखांकित करते हुए यह पाया है कि समाज की आखों के सामने तथाकथित जन नायकों की वास्तविकता रखने में यह पत्रिका साफ दर्पण का काम कर रही हैं। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूॅ कि आप पूरे सौ वर्ष तक स्वस्थ रहकर इस अति उपयुक्त कार्य को करते रहे और इस ज्ञान तत्व दीपक को जलाते रहे। यदि आपका आगमन इधर पश्चिमी उ0प्र0 में आगामी वर्षो में हो तो कृपया मुझे सूचित कर कृतार्थ करें ताकि समय निकाल कर मैं आपका सानिध्य प्राप्त कर सकूॅ। ज्ञान तत्व प्रकाशन में जो भी भाई बहन आपके साथ सहयोग कर रहे हैं उनके प्रति मेरा बहुत बहुत वन्दन।

(4.)डॉ0 डी0आर0 मिश्रा, पी0एच0 डी0डी0 लिट, नीलोखेड़ी ,हरियाणा

ज्ञान तत्व मिला। एन्डरसन सम्बन्धी देश भर में फैलाये जा रहे उन्माद और आपकी संतुलित प्रतिक्रिया को बारीकी से समझा। आप अकेले नहीं है। मैं भी एन्डरसन प्रकरण में व्यक्त विचारों से शतशः सहमत हूँ । प्राकृतिक आपदा अथवा आकस्मिक दुर्धटना को टाला नहीं जा सकता– कुछ सीमा तक सावधान अवश्य रहा जा सकता है। किसी रेल दुर्घटना में कालकवलित व्यक्तियों के लिए दोषी मानकर रेलमंत्री को दंडित करना सर्वथा अनुचित होगा। हम रेलमंत्री की आलोचना कर सकते है या उन्हें हटा सकते है । किसी स्वदेशी या विदेशी फैक्ट्री के दुर्घटना ग्रस्त होने पर उसके दूर अवस्थित सी0एम0डी0 को दंड देने की प्रक्रिया शुरू की गयी, तो कोई भी कम्पनी भारत में निवेश नहीं करना चाहेगी। जोखिम तो हर काम में होता है। अनेक प्रकार की सावधानियॉ होने पर भी दुर्घटना हो जाती है। बचाव के शत प्रतिशत उपाय भी काम नहीं आते। कभी–कभी अत्यधिक भावना पर अंकुश लगाना भी आवश्यक हो जाता हैं । दंड और मुआवजा अलग अलग विषय है । दंड गलती के लिए होता है और मुआवजा नुकसान के लिए । यदि छोटी गलती से बड़ा नुकसान हो जाये तो दंड गलती के ही अनुसार होगा तथा बड़ी गलती में नुकसान बिल्कुल न हो तो भी दंड तो बड़ा होगा ही भले ही मुआवजा न हो ।

(5) श्री दीनानाथ वर्मा, टैगोर नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़–492001

ज्ञान तत्व दो सौ सात मिला। आघोपान्त पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। स्वामी अग्निवेश एक छद्मवेशी मक्कार कम्युनिष्ठ व्यक्ति है जो शांतिदूत रूपी खाल औढकर अपना उल्लू सीधा करने में लगा हैं सोहराबुद्दीन प्रकरण, पंजाब में शांति व्यवस्था, सर्वोदय , विनोबाजी की अग्निवेश, तरह की चाल, सांसद वेतन वृद्धि , विषय पर आपके विचार शतप्रतिशत सत्य और सम सामयिक हें महंगाई नक्सलवाद आदि विषय पर आप सही सोच रखते हैं। सती प्रथा पर आपका बेबाक बयानी काबिले तारीफ हैं। सरकारीकरण और बाजारीकरण उप उत्तर विचार पढ़ने को मिला । अनाज का सड़ना और तत्संबंधी विचार अत्युन्तम रहा। सरगुजा का चीनी मिल एक ज्वलन्त उदाहरण है। आपके ज्ञानतत्व के विचार ज्ञानवर्द्धक ,उत्साहप्रद, तर्कसंगत, सामयिक एवं लोकोपयोगी हैं मैं एम0ओ0 से 100/– भेज रहा हूँ। प्रयास करूँगा कि दिनांक 25/12/10 को रामानुजगंज पहुँचूं । ज्ञानतत्व दो सौ छः में इस्लामिक आतंकवाद उसके धार्मिक कट्टरवाद का परिणाम शीर्षक लेख चौकाने वाले हैं। मैं आर0एस0ए0 भाजपा का समर्थक रहा हूँ परन्तु ज्ञान तत्व ने मेरी आंखें खोल दी। लब जिहाद–इस्लाम का एक खतरनाक खेल है। बिल्कुल यथार्थ है ,सत्य है। इस ओर राजनीतिक नेता शुतुरमुर्ग की तरह अपनी सिर रेत में गड़ा कर, अपना स्वार्थ सिद्ध करने में आकण्ठ डूबे हुए है, और जरा भी ध्यान नहीं दे रहे हैं। अंक 203 सत्य को प्रकट करता हैं । प्रत्येक अंक सत्य ज्ञान से ओतप्रोत रहता है। मैं प्रत्येक अंक की उत्सुकता से प्रतीक्षा करता हूँ। मैं छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का संस्थापक सदस्य के साथ–साथ सात वर्ष दिनांक 14/3/10 तक महामंत्री रहा हूँ सम्प्रति स्वाधाय –चिंतन–में समय का सदुपयोग कर रहा हूँ मेरी आयु 63 वर्ष चल रही है। मैं महर्षि दयानन्द का अनुयायी और आप जैसे विचारवान का समर्थक हूँ।

(6) भगवान दास जोपट, वेस्ट माटड़ पल्ली, सिकन्दरावाद

ज्ञान तत्व बराबर मिलते हैं। ध्यान से पढ़ता भी हूँ और पढ़ाता भी। सीमित आय के कारण शुल्क न भेजने की मजबूरी है। अतः निवेदन है कि ज्ञान तत्व बंद कर दें। अंक दो सौ छः तो कमाल का हैं। ज्ञान तत्व सत्य और निष्पक्ष विचारों का यह पाक्षिक वस्तुतः कबीर जी तरह दो टूक, खरी–खरी कहनेवाला निर्भिक पत्र है जिसमें आपके मोती सद्राय विचार कटु औषधी की तरह गुणकारी एवं रोग शमन करने वाले होते हैं। ठाकुर सुहाती एवं रामदरबारी के इस चारण युग में आपकी सत्यनिष्ठ बाते पठनीय होती है जो हमारी राष्ट्रीयता एवं सामाजिक संस्कृति के लिए संजीवनी हैं आका सुचिन्त्य दर्शन, विचार, प्रतिबद्धता एवं मॉ भारती के प्रति अनुराम स्तुत्य हैं हे तात, आप प्रणम्य हैं। कृपया मुझ अकिंचन की ओर से मंगलकामनाएं स्वीकार करें प्रभु आपको सुन्दर स्वास्थ्य एवं अकूत यश प्रदान करें।

(7) सत्यदेव गुप्त सत्य, रूदौली, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

ज्ञान ततव के अंक मिलते रहते हैं। एक पत्र के साथ कुछ आपकी कथाओं की सीडी तथा नये सदस्य बनाने हेतु रसीद बुक भी मिली। सच यह है कि मैं ज्ञान तत्व पढ़ता भी हूॅ और पढ़ाता भी हूॅ सीडी देखता भी हूॅ और यथा संभव कुछ मित्रों को दिखाता भी हूॅ किन्तु ज्ञानतत्व का शुल्क सौ रूप्या मांगना और इकट्ठा करके भेजना मेरे लिये कठिन हैं। प्रयास करूंगा कि कम से कम कुछ सदस्य बना दूॅ। निःशुल्क की सूची भेजने में संकोच होता है कि आपको कितनी आर्थिक क्षति पहुचाउॅ। अतः आप मेरी मजबूरी को समझेंगे।

उत्तर– आप सबकी आलोचना मेरी विचारण शक्ति को जागृत करती है तथा प्रशंसा कार्य शक्ति को।आलोचना और प्रशंसा दोनों ही मेरे लिये उपयोगी है किन्तु आलोचना अधिक उपयोगी है यदि उसमें निन्दा का भाव न छिपा हो। निन्दा और आलोचना बिल्कुल पृथक पृथक विषय हैं। आलोचना विचारों की होती है और निन्दा व्यक्ति की ।हम लोग दोनरों का अन्तर महसूस करते हैं। यही कारण है कि समीक्षा या आलोचना का उत्तर वैचारिक धरातल पर दिया जाता है और निन्दा का लठमार तरीके से।

आप सब विद्वानों ने प्रशंसा करके मेरा उत्साह बढ़ाया है । मन तो ऐसा करता है कि बस तत्काल ही छलांग लगाकर समुद्र पार कर दूॅ और सीता तक पहुॅच जाउॅ किन्तु आर्थिक स्थिति शारीरिक स्थिति तथा मानसिक रूप से भी वानप्रस्थ ने ऐ लक्ष्मण रेखा खींच रखी है अतः अब हुमान की भूमिका छोड़कर जामवंत तक ही संतोष करना व्यावहारिक होगा।

ज्ञान तत्व एक विचित्र और अद्भुत पत्रिका है ऐसा मानने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही हैं परिणाम भी अच्छे हैं । माना जा रहा है कि ज्ञान तत्व एक समुद्र है जिसमें अमृत भी है और विष भी । दोनों को अलग अलग करने के पूर्व मंथन करना आवश्यक हे जो आप सबका काम है, मेरा नहीं। मैं तो उन नदियों की तरह हूॅ जो अपना शेष जल समुद्र में पहुॅचा कर अपना अस्तित्व समाप्त कर लेती हैं। मुझे आत्म संतोष होता है जब आपके पत्रों से मुझे पता चलता है कि ज्ञान तत्व आप सबके विचार मंथन के उपयोग में आ रहा हैं । आप मुझे ऐसा संतोष कराते रहें जो मेरा उत्साह बढ़ाते रहें।

ज्ञान तत्व का कोई शुल्क नहीं हैं। वह पूरी तरह निःशुल्क है। वर्तमान में लागत मूल्य वार्षिक सौ रूप्या और आजीवन का पांच सौ रूपया माना जाता हैं । सदस्यता पांच प्रकार की है (1) निःशुल्क (2) सशुल्क (3) संरक्षक (4) ट्रस्ट(5)सहायक। मेरी नजर में सभी पाठकों की भूमिका एक समान हैं । कोई व्यक्ति दस रूप्या वार्षिक भी भेजता है तो सशुल्क है और सौ रूप्ये भेजता है वह भी। जो एक हजार रूप्या वार्षिक देते हैं वे संरक्षक सदस्य और दस हजार रूपया वार्षिक देने वाले ट्रस्टी सदस्य होते हैं। सभी प्रकार के सदस्य बड़ी संख्या में हैं। संरक्षक सभा तथा ज्ञान यज्ञ परिवार ट्रस्ट का धन आवश्यकतानुसार ज्ञान तत्व पर भी खर्च होता है तथा ग्राम सभा सशक्तिकरण, लोकस्वराज्य अभियान तथा अन्य गतिविधियों पर। धन का न कोई अभाव हे न प्रचुरता। समाज का काम है और ठीक स`चल रहा है। आप किसी भी रू॰ में महसूस न करें कि आपने शुल्क नहीं दिया हैं या आप इकट्ठा नहीं कर पा रहें हैं। समाज में विद्वान तो युगों से भिखारी रहा है। मेरे रसीद बुक भेजने का यह आशय नहीं कि आप धन संग्रह करें। उसका आशय यह हे कि आप ऐसे नाम संग्रह करके भेजें जिन्हें ज्ञान तत्व भेजा जाय चाहे वे निःशुल्क पाठक हों या सशुल्क। चाहे वे संरक्षक सदस्य बने या ट्रस्टी । ज्ञान तत्व के समक्ष निःशुल्क और ट्रस्टी का समान सम्मान है। आप जो निःशुल्क नाम भी भेजेंगे वे एक वर्ष पढ़ने के बाद यदि विज्ञान होंगे तो वे बौद्धिक सहायता करेंगे, सक्षम होंगे तो शुल्क भेज देंगे तथा यदि सम्पन्न होंगे तो संरक्षक या ट्रस्टी भी बन सकते हैं। शुल्क सदस्यता के लिये कहीं अनिवार्यता नहीं क्योंकि ज्ञान तत्व का कोई शुल्क नहीं है। आप किसी रूप में अपना मनोबल छोटा मत करिये। आप लोग ही तो हमारी पूंजी हैं।

यदि कोई साथी रसीद बुक के लिये सूचना दें तो उन्हें हम भेज देंगे अन्यथा आप पोस्टकार्ड या सादे कागज पर भी लिखकर नाम भेज सकते हैं। आप एक दो नाम भी भेज सकते हैं और दस बीस भी। किन्तु आप कुछ नाम अवश्य भेंजे।

अपनों से अपनी बात

दिल्ली से लौटने के बाद चिन्तन और कार्य विस्तार संतोषप्रद है। ज्ञान यज्ञ परिवार की कार्य समिति का अस्थायी गठन पिछले वर्ष दिल्ली सम्मेलन से हो चुका है जो अब तक कार्य कर रहा है। वह इस प्रकार हैः–

(1) संरक्षक श्री बजरंग मुनि, अंबिकापुर
(2) अध्यक्ष श्री रामकृष्ण पौराणिक,10, 8 अलखनन्दा नगर, रिला अस्पताल के पास, उज्जैन,म0प्र0
(3) उपाध्यक्ष श्री कृष्णलाल रूंगटा , धनबाद ,झारखंड
(4) उपाध्यक्ष श्री अशोक त्रिपाठी, वाराणसी (उ0प्र0)
(5) उपाध्यक्ष श्री श्रुतिवन्तु दुबे, सीधी, मध्यप्रदेश
(6) उपाध्यक्ष श्री जी0पी0 गुप्ता, छत्तरपुर,म0प्र0
(7) उपाध्यक्ष श्री छबील सिंह सिसोदिया, गाजियाबाद, उ0प्र0
(8) उपाध्यक्ष श्री सिद्धार्थ शर्मा ,बैंगलोर, कर्नाटक
(9) उपाध्यक्ष जयेन्द्र रमण शाह, अहमदाबाद, गुजरात
(10)उपाध्यक्ष श्री पंकज अग्रवाल, अंबिकापुर
(11)उपाध्यक्ष श्री ओमपाल जी, मेरठ, उ0प्र0
(12)उपाध्यक्ष श्री सुरेश जी, दिल्ली,
(13)उपाध्यक्ष श्री विजय शंकर शुक्ल,देहरादून, उत्तराखंड

कार्यकारिणी के सदस्य

(14) बालकृष्ण ओझा ,हैदराबाद, आ0प्र0
(15) श्री बद्री नारायण सिंह, मैसूर, कर्नाटक
(16) एम0एच0 पाटिल, धारवाड ,कर्नाटक
(17) डॉ0 इस्लाम अहमद, फारूकी, काशीरामनगर,
(18) उमाशंकर यादव, कुशीनगर
(19) श्री अजय भाई ,गाजियावाद , उ0प्र0
(20) रामचंद्र दूवे, रेवतीपुर , गाजीपुर
(21) श्री ओंकार नाथ, गोरखपुर
(22) चित्रांगद श्रीवास्तव,आई0टी0आई0 ,गोण्डा ,उ0प्र0
(23) डॉ0 मिथलेश मिश्र, गोण्डा, उ0प्र0
(24) घनश्याम गर्ग, नोएडा, उ0प्र0
(25) श्री चंद्रिका चौरसिया, देवरिया,उ0प्र0
(26) श्री रामभूषण सिंह, फतेहपुर,उ0प्र0
(27) रामखेलावन सिंह, देवीगंज, फतेहपुर
(28) बहादुर सिंह यादव, धनारी,
(29) राजनारायण गुप्त, बरेली , यु.पी.
(30) श्वेत केतु शर्मा,बरेली, उ0प्र0
(31) ओम प्रकाश बाराबंकी
(32) धर्मवीर शास्त्री,बिजनौर,उ0प्र0
(33) डा0 प्रकाश बिजनौर,उ0प्र0
(34) उमा पति पांडे, मउनाथ भंजन,उ0प्र0
(35) कृष्ण देव सिंह, अधिवक्ता, मउ,उ0प्र0
(36) श्रीरती राम प्रधान ,सहारनपुर, उ0प्र0
(37) नरेन्द्र नीरव जी, ओबरा, सोनभद्र, उ0प्र0

(38) डा0 रामतीर्थ अग्रवाल, नई दिल्ली
(39) जसवन्त राय इंदौर, म0प्र0
(40) रमेश चंद्र जोशी, उज्जैन, म0प्र0
(41) दुर्गेश कुमार दुबे,रीवां ,म0प्र0
(42) मधुसूदन अग्रवाल, गोंदिया ,महाराष्ट्र
(43) श्री श्याम सुन्दर तिवाड़ी ,शोलापुर,महाराष्ट्र
(44) सदा विजय आर्य ,शहाजनी, महाराष्ट्र
(45) टी0पी0 जालान,खगड़िया, बिहार
(46) जगतनारायण सिंह भोरे, गोपालगंज,बिहार
(47) महेश भाई, बिजयीपरु, गोपालगंज
(48) श्रीमति रेणु गुप्ता,पू0चम्पारन ,बिहार
(49) श्याम सुंदर व्यास, उदयपुर
(50) ध्रुव सत्य अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान
(51) रिषभ जागरूक, जयपुर, राजस्थान
(52) शंकर लाल सीवर,हनुमानगढ़,राजस्थान
(53) जय भगवान शर्मा, पानीपत,हरियाणा
(54) बाबूराम सैनिक ,फरीदाबाद
(55) अमर चंद्र शास्त्री, फरीदाबाद, हरियाणा
(56) बलवंत सिंह यादव, कोटरवाड,शिमला
(57) आर्य प्रहलाद गिरि, निंगा आसनसोल,पं0बंगाल
(58) वैघराज अहुजा,भानूप्रतापपुर, छ0ग0
(59) सचिव, प्रवीण अग्रवाल, अंबिकापुर

नोट– कुछ नाम और तय हुये थे जिनकी सहमति असहमति न मिलने स`अब तक घोषित नहीं किये गये । दिसम्बर सम्मेलन में नई समिति घोषित होगी ।

केंद्रीय कार्यालय, बनारस चौक, अंबिकापुर
फोन नंबर–07774–230640

आठ दिवसीय लोक स्वराज्य सम्मेलन में स्थायी समिति बन जायेगी। सम्मेलन के पूर्व कुछ चर्चा करनी आवश्यक हैं। ज्ञान यज्ञ परिवार एक बिल्कुल स्वतंत्र संस्था हैं जिसका मुख्य कार्य भिन्न विचारों के व्यक्तियों को एक साथ बैठकर स्वतंत्र विचार मंथन हेतु प्रेरित करना है। यह ज्ञान यज्ञ परिवार के कार्यो की अन्तिम सीमा हैं। परिवार एक संस्था के रूप में न कोई प्रस्ताव पारित करेगा न ही कहीं सक्रिय होगा। ज्ञान यज्ञ परिवार का कोई भी सदस्य किसी भी अन्य संस्था के साथ जुड़ सकता है और काम कर सकता हैं समाज में विचार मंथन बढ़े इसका हम प्रयास करते रहेंगे।

यदि कोई संगठन ग्राम सभा सशक्तिकरण के लिये कोई आंदोलन चलाता है तो स्थानीय ज्ञान यज्ञ परिवार उसमें संस्था के रूप में सहभागी हो सकता हैं। मेरे विचार में हमें होना भी चाहिये किन्तु यह स्थानीय स्वतंत्रता है।

यदि कोई संगठन लोक स्वराज्य की दिशा में सक्रिय है तो हम उसमें सहयोग करें। सहभागिता से बचे यह भी स्थानीय स्वतंत्रता है।

यदि कोई संगठन अन्य कार्य करे तो ज्ञान यज्ञ परिवार के लोग व्यक्तिगत रूप से सहयोग या विरोध कर सकते हैं। यह संस्था का मामला नहीं।

पिछले दिनों यह विशेष बात हुई कि पांच व्यक्तियों (1)श्री आम प्रकाश जी दुबे (2) श्री ईश्वर दयाल जी राजगीर (3) श्री केशव चौबे , अंबिकापुर (4) श्री महावीर सिंह जी नोयडा तथा श्री अमरसिंह जी आर्य जयपुर ने लोक समिति नाम से एक नया संगठन बनाया और मुझे उसका कोषाध्यक्ष बनाया जो मैंने अस्वीकार कर दिया। उक्त कमेटी का गठन ज्ञान तत्व दो सौ दो में छपा। लोक स्वराज्य के लिये एक

संगठन लोक स्वराज्य अभियान पहले से था ही जिसके प्रमुख ठाकुर दास जी बंग तथा कार्यकारी अध्यक्ष दुर्गा प्रसाद जी आर्य थे। मुझे यह गठन अनावश्यक लगा। सब लोग सेवाग्राम में बैठे और तय हुआ कि लोक स्वराज्य अभियान का नाम बदलकर लोक स्वराज्य संघ कर दिया जाय। मैंने स्पष्ट कर दिया कि मैं बाहर से सहायता करूंगा लेकिन कमेटी में शामिल नहीं हो सकता। खर्चे का प्रश्न उठा तो मैंने यह स्पष्ट किया कि ज्ञान यज्ञ परिवार ट्रस्ट लोक स्वराज्य के कार्यो में खर्च करेगी और लोक स्वराज्य संघ तो अपना है ही। ज्ञान यज्ञ परिवार के लोग भी इस संगठन का साथ देंगे। बंग जी के मार्गदर्शन से बैठक समाप्त हुईं। पिछले कुछ महिनों से लोक स्वराज्य अभियान (जो अब संघ हो गया) के कुछ साथी ज्ञान यज्ञ परिवार के स्वतंत्र विचार मंथन को लोक स्वराज्य अभियान में बाधक मानने लगे थे जिसकी परिणति लोक समिति के गठन से हुई। मुझ पर भारी दबाव बनाया गया और जब मैं नहीं माना तब मेरे विरूद्ध अनेक चर्चाएँ शुरू की गई। ज्ञान यज्ञ परिवार के कई साथियों ने मुझे फोन करके जानकारी दी। पांच में से तीन साथी अमरसिंह जी, केशव चौबे जी तथा महावीर सिंह जी का व्यवहार तो संतुलित था किन्तु दुबे जी और ईश्वर दयाल जी को ज्यादा आपत्ति थीं। सबसे ज्यादा आपत्ति मेरे सर्वोदय संबंधी लेखन पर थी। मैंने अपने पांचों साथियों के समक्ष भी स्पष्ट किया कि मैं व्यक्तिगत रूप से महसूस करता हूँ कि भारत का सबसे ज्यादा नुकसान सर्वोदय ने किया है जिसने लोक स्वराज्य की लाइन छोड़कर राजनेताओं को इतनी छूट दे दी। मैं न गांधीवादी हूँ न सर्वोदयी। क्योंकि यदि मैं भी सर्वोदयी होता तो गांधी के पीछे चलता। कल्पना करिये की गांधी आगरा से दिल्ली के लिए चलना शुरू किये और उनके पीछे अनेक लोग चल पड़े एकाएक मथुरा में गांधी की हत्या हो गयी और साथ चलने वालों को यह पता ही नहीं है कि आगे अब किस रास्ते से जाना है । अब वे लोग आगरा से मथुरा और मथुरा से आगरा के मार्ग पर 60 वर्षो से चल रहे है, जबकि आवश्यकता मथुरा से आगे का मार्ग खोजकर आगे चलने की है , यदि उनमें खोजने की क्षमता नहीं है तो ऐसा मार्ग खोजने वालों को परेशान न करें । गांधी ने राष्ट्रीय स्वराज्य के बाद लोक स्वराज्य को लक्ष्य बनाया था , लेकिन उनकी हत्या होते ही हमारे मित्र खादी , शराब बंदी, आर्थिक समस्या निवारण में ही उलझ गये। मेरा तो लक्ष्य रहा है कि आज की देश काल परिस्थिति के अनुसार यदि गांधी जीवित होते तो क्या करते? उसी कल्पना के आधार पर मैं गांधी हत्या के दिन से आगे की राह पर चलने की सोच रहा हूँ। मैंने फिर से दोनों साथियों को स्पष्ट कर दिया कि आप गांधी के पीछे चलते हैं, गांधी के आगे चलते हैं या किसी अन्य स्वतंत्र मार्ग का निर्माण करते हैं यह आपकी स्वतंत्रता हैं। मैं तो गांधी के लोक स्वराज्य को आदर्श स्थिति मानकर उस एक मात्र मार्ग पर आगे बढ़ना चाहता हूँ। जो लोग गांधी की खादी, शराब बंदी, अर्थनीति, स्वावलम्बन, त्याग, चरित्र आदि को प्राथमिकता मानकर गांधी के पीछे चलें यह उनकी स्वतंत्रता हैं। इतना अवश्य है कि मैं उनके कार्यो के विरूद्ध नहीं तो वे भी लोक स्वराज्य के कार्य में बाधक न बने।

मैं पुनः स्पष्ट कर दूँ कि मैंने गांधी और जयप्रकाश के साथ हुए धोखें से सीख ली है। मैं ऐसा धोखा न खाने के लिये पूरी तरह सतर्क हूँ। मैं गांधी और जयप्रकाश के पीछे नहीं जैसा हमारे दोनों साथियों को भ्रम रहा। मेरे ज्ञान यज्ञ परिवार के साथियों को जरा भी चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं। न मैं किसी का दबाव सहन करूंगा न आपको सहन करने की सलाह दूंगा। ज्ञान यज्ञ परिवार के लोगों को लोक स्वराज्य संघ की सहायता करनी चाहिये। किन्तु यदि उनका कोई कार्यकर्ता दबाव बनाना चाहे तो उन्हें स्पष्ट करिये कि ज्ञान यज्ञ परिवार, लोक स्वराज्य संघ, ग्रामसभा सशक्तिकरण अभियान, ज्ञान यज्ञ परिवार ट्रस्ट आदि बिल्कुल स्वतंत्र इकाइया हैं जो एक दूसरे की सहायक हो सकती है सलाहकार हो सकती हैं किन्तु नियंत्रक नहीं। दूबे जी और ईश्वर दयाल जी को ये सीमाएँ समझनी चाहियें और ज्ञान यज्ञ परिवार की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप नहीं करना चाहियें।

पचीस दिसम्बर से एक जनवरी तक का लोक स्वराज्य सम्मेलन रामानुजगंज में सम्पन्न होना है। पूरे आयोजन की व्यवस्था और खर्च ज्ञान यज्ञ परिवार करेगा। बहु उद्धेश्यीय योजना है। ज्ञान कथा, ज्ञान यज्ञ, स्वतंत्र विचार मंथन तथा नाटक का आयोजन ज्ञान यज्ञ परिवार, करेगा। ग्राम सभा सशक्तिकरण अभियान सात दिनों तक गांव सर्वेक्षण की व्यवस्था करेगा। लोक स्वराज्य संघ की बैठक और सम्मेलन उन्तीस तारीख को होगा जिसका संचालन दुर्गा प्रसाद जी करेंगे। ट्रस्ट की बैठक तीस तारीख को होगी। जिसका संचालन अशोक गदिया जी करेंगे। व्यवस्था परिवर्तन अभियान, लोक संविधान सभा, व्यवस्था परिवर्तन मंच आदि की चर्चा बीच में कभी भी रखेंगे जिसका संचालन गदिया जी, रामबहादुर राय जी,

प्रमोद वात्सल्य जी या पंकज जी करेंगे। इकतीस तारीख को आम सभा होगी जो सबकी संयुक्त होगी और उसका संचालन मैं करूंगा। एक तारीख को पूरी समीक्षा तथा भविष्य की योजना पर चर्चा होगी। सभी कार्यक्रम सबके लिये खुले रहेंगे किन्तु बोलने की अनुमति संचालक से लेनी होगी। किसी भी तरह की समस्या आने पर अन्तिम निर्णय का अधिकार ज्ञान यज्ञ परिवार के अध्यक्ष श्री रामकृष्ण जी पौराणिक का रहेगा। वे आवश्यकता पड़ने पर कार्यक्रमों में हेरफेर भी कर सकते हैं।

इस एक सप्ताह के कार्यक्रम में आप सबकों अधिक से अधिक संख्या में आने हेतु गंभीर लोगों को प्रेरित करना चाहिये। आप एक साथ ही गांवों में लोक स्वराज्य की शुरूआत भी देख सकेंगे। नई समाज रचना का विलक्षण प्रयोग भी शुरू हो रहा हैं। किसी असंभव सरीखे दिखने वाले कार्य की शुरूआत हैं। प्रतिदिन बैठकर आगे की योजनाओं की भी चर्चा होनी है। सबसे बड़ी बात आपको यह देखने को मिलेगी कि किस प्रकार अलग अलग विपरीत विचारों वालें संगठनों के लोग एक साथ बैठकर विचार मंथन करते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आप इसके बाद एक नई उर्जा, नई योजना साथ लेकर जायेंगे।

इस कार्यक्रम में जो भी सज्जन कोई आर्थिक सहयोग देना चाहेंगे वे जिस संगठन को देना चाहेंगे उन्हें देने की स्वतंत्रता होगी किन्तु किसी से न तो कुछ मांगा जायेगा न ही किसी दान हेतु प्रेरित किया जायेगा। यदि किसी को आर्थिक कठिनाई होगी तो उनके केन्द्र प्रभारी की सलाह पर आधा मार्ग व्यय दिया जा सकता है।

आशा है कि आप मेंरे इस निवेदन को ही आमंत्रण मानकर स्वयं आने तथा अन्य मित्रों को प्रेरित करने की कृपा करेंगे।

रामानुजगंज की भौगोलिक स्थिति इस प्रकार है

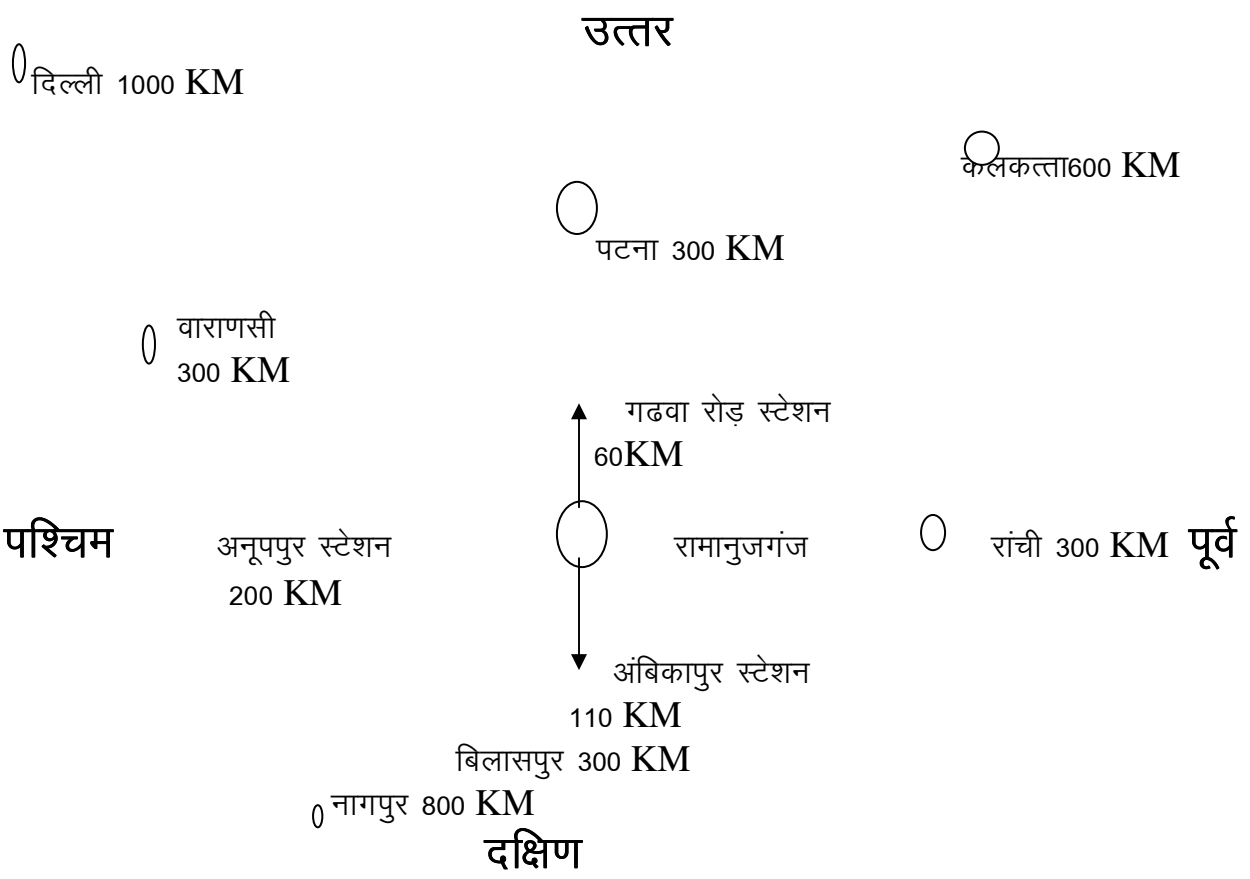

(1) नोट– (1)अंबिकापुर स्टेशन तथा गढ़वा स्टेशन से पर्याप्त बसें तथा हमारे साधन भी मिलेंगे।

(2)वाराणसी, रांची, बिलासपुर से रामानुजगंज बस रूट से भी आ सकते हैं।

(3)दिल्ली से गढ़वा रोड़ अनूपपुर अंबिकापुर रेल मार्ग से भी आ सकते है। किंतु गढ़वा रोड़ आना सुविधा जनक होगा। अन्य गाड़ियों के अतिरिक्त दिल्ली से बुधवार शनिवार को गरीब रथ तथा रविवार को राजधानी भी चलती हैं गरीब रथ या राजधानी शाम चार बजे नई दिल्ली से छूटकर बारह घंटे में ही गढ़वा रोड़ प्रातः चार बजे उतार देगी।

(4)रामानुजगंज में एक ही धर्मशाला हैं। धर्मशाला पूछने से पता चल जायेगा।

(5)और जानकारी के लिये फोन 9617079344 से संपर्क कर सकते हैं।

(6)रायपुर बिलासपुर से ट्रेन रात में चलती है जो प्रातः सात बजे अंबिकापुर पहुंचती है। रामानुजगंज दो घंटे का रास्ता है।

(7)आने जाने के सभी मार्गो की सड़के उच्च स्तरीय हैं।

(8)वाराणसी से बस से आने वाले अंबिकापुर जाने की अपेक्षा वाड्रफनगर उतर कर बस बदल सकते हैं।